"इकाई - 1"

"b"

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

अर्थशास्त्र शिक्षण - प्रकृति →

अर्थशास्त्र की प्रकृति से अभिप्राय है कि अर्थशास्त्र कला है या विज्ञान या दोनों? अर्थशास्त्र विज्ञान है या कला, यह जानने से पूर्व विज्ञान और कला नामक शब्दों के अर्थ को जानना आवश्यक है।

विज्ञान का अर्थ → "विज्ञान ज्ञान का क्रमबद्ध अध्ययन है जो कि कार्य के कारण तथा परिणाम के पारस्परिक सम्बन्ध को बताता है"। गेलब्रिथ के अनुसार "विज्ञान ज्ञान का वह समूह है, जो सम्पूर्ण सत्य को स्पष्ट करने के लिए खोज करता है।" इस प्रकार विज्ञान ज्ञान का वह रूप है जो निम्नलिखित बातों को पूरा करता है -

(i) इसके अपने सिद्धान्त एवं नियम होने चाहिए।

(ii) ये नियम सार्वभौमिक सत्य का प्रतिपादन करें।

इस प्रकार विज्ञान ज्ञान का वह भण्डार है, जिसमें निरीक्षण और प्रयोगों द्वारा प्राकृतिक घटनाओं का अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन केवल तथ्यों के संग्रह के रूप में नहीं होता वरन् क्रमबद्ध तथा नियमबद्ध होता है इसलिए ~~पाइनकेयर~~ पॉइनकेयर ने कहा है, "विज्ञान तथ्यों से इस प्रकार बना है

जिस प्रकार पत्थरों से एक मकान बनाया जाता है, परन्तु मात्र तथ्यों के एकत्रीकरण को उसी भाँति विज्ञान नहीं कहा जा सकता जिस प्रकार पत्थरों के ढेर को मकान नहीं कहा जा सकता है।"

क्या अर्थशास्त्र एक विज्ञान है? →

जो विद्वान अर्थशास्त्र को एक विज्ञान मानते है वे इसके पक्ष मे निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत करते है —

(I) इसमे कार्य-कारण तथा परिणाम के सम्बन्ध को स्पष्ट किया जाता है।

(II) इसमे सार्वभौमिक नियमों का भी निर्माण किया जाता है, उदाहरणार्थ, उपयोगिता ह्रास नियम।

कुछ विद्वान अर्थशास्त्र को विज्ञान नहीं मानते है वे अपने पक्ष मे निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत करते है —

(I) अ अर्थशास्त्र मे निश्चितता का अभाव पाया जाता है, जबकि विज्ञान सुनिश्चित होता है। वैज्ञानिक नियमों के निर्माण के लिए सही आँकड़ो का होना आवश्यक है परन्तु अर्थशास्त्र के आँकड़े परिवर्तित होते रहते है। इस कारण इसमें विज्ञान जैसे नियम नहीं बन पाये है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते है कि वैज्ञानिक विधि

को एक विज्ञान की श्रेणी में रखा जा सकता है। परन्तु ~~एक~~ यह एक निश्चित विज्ञान नहीं है। यह एक वास्तविक विज्ञान तो है क्योंकि यह मानव की आर्थिक के 'कारण' और 'परिणाम' का सम्बन्ध स्थापित करता है और उसी आधार पर कुछ नियमों का प्रतिपादन करता है। हम अपने इस विचार की पुष्टि 'रॉबिन्स' के शब्दों से कर सकते है, "अर्थशास्त्री का कार्य अनुसन्धान एवं व्याख्या करना है न कि समर्थन अथवा निन्दा करना।"

क्या अर्थशास्त्र एक कला है ? →

- कला विज्ञान की भाँति ज्ञान का व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध भण्डार है। परन्तु कला में एक विशेषता पायी जाती है जो कि विज्ञान में नहीं है। कला सदैव निश्चित नियमों का प्रतिपादन करती है और विशिष्ट समस्याओं के लिए समाधान प्रदान करती है। विज्ञान सदैव सैद्धान्तिक होता है और कला सदैव व्यावहारिक होती है। प्रो. कोसा के शब्दों में, "विज्ञान हमें सैद्धान्तिक ज्ञान की शिक्षा देता है, जबकि कला हमें व्यावहारिक क्रियाओं का प्रशिक्षण प्रदान करती है।" यदि इस दृष्टि से अर्थशास्त्र को देखा जाये तो अर्थशास्त्र एक कला भी है। यह हमें आर्थिक समस्याओं के समाधान में व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करती है। अतः अर्थशास्त्र विज्ञान के साथ-साथ एक कला

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताण्डा, बलिया

भी है। अर्थशास्त्र ~~एक~~ कला है इसके पक्ष में ~~निम्नलिखित~~ निम्नांकित तर्क दिये जा सकते हैं —

(I) अर्थशास्त्र सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक दोनों है।

(II) अर्थशास्त्र ~~का~~ के कला होने से अर्थशास्त्र के वैज्ञानिक स्वरूप मे कोई बाधा नहीं पड़ती।

अर्थशास्त्र विज्ञान एवं कला दोनों है —

अब यह ~~प्रश्न~~ प्रश्न उठता है कि अर्थशास्त्र विज्ञान है या कला अथवा दोनो ? इस सम्बन्ध मे यह कहा जा सकता है कि अर्थशास्त्र एक विज्ञान है, क्योंकि अन्य शास्त्रों की तरह इसमे भी नियम पाये जाते है। दूसरे शब्दो मे कह सकते है कि अर्थशास्त्र में मानव के उस व्यवहार का अध्ययन किया जाता है, जिसका सम्बन्ध 'Choice Making' या 'Valuation' से है और इसके नियमों में क्रमबद्धता भी पायी जाती है। परन्तु इसके साथ ही यह कला भी है, क्योंकि यह शास्त्र हमको अनेक व्यावहारिक समस्याओं को सुलझाने की विधि भी बताता है। ~~प्रो.~~ प्रो. पीगू ने कहा है कि "प्रत्येक शास्त्र प्रकाश एवं फल दोनों ही देने वाला है परन्तु किसी भी प्रकाश ~~देने~~ देने वाला तत्व अधिक महत्वपूर्ण है इस प्रकार हम कह सकते है, कि

अन्त में, हम पीगू के शब्दों में कह सकते हैं "जब हम अर्थशास्त्र का अध्ययन करते हैं तब हमारा दृष्टिकोण एक दार्शनिक जैसा नहीं होता है, अर्थात हम ज्ञान की खोज ज्ञान के लिए नहीं करते वरन् हमारी मनोवृत्ति एक डाक्टर के समान होती है जो कि रोगियों की सेवा करने के लिए ज्ञान प्राप्त करने का इच्छुक होता है।" इसी कारण प्रो. कोसा ने कहा है, "विज्ञान को कला और कला को विज्ञान की आवश्यकता है। ये दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।" ~~शुद्ध विज्ञान अर्थ शुद्ध विज्ञान~~ शुद्ध विज्ञान अर्थशास्त्र को विज्ञान तथा कला के रूप में न देखकर उसे शुद्ध विज्ञान तथा व्यावहारिक विज्ञान (Pure Science and Applied Science) के रूप में देखते हैं। शुद्ध विज्ञान के रूप में अर्थशास्त्र यह स्पष्ट करता है - वह क्या है? (What is it?) यह कैसे कार्य करता है? (How it works?) तथा इसके प्रभाव क्या हैं? (~~W~~What its effects are?) यह हमें यह भी बताता है कि इसके प्रभाव अच्छे है या बुरे। व्यावहारिक विज्ञान शुद्ध विज्ञान से ज्ञान प्राप्त करता है और उसे अर्थशास्त्र की समस्याओं के हल के लिए लागू करता है। इस प्रकार शुद्ध विज्ञान उन साधनों को प्रदान करता है जिन्हें व्यावहारिक विज्ञान प्रयोग में लाता है। अतः अर्थशास्त्र एक शुद्ध तथा व्यावहारिक विज्ञान है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान

अर्थशास्त्र शिक्षण का क्षेत्र एवं स्थान →

पिछले अनुच्छेदों में हम अर्थशास्त्र की परिभाषाओं पर विचार कर चुके हैं। अब हम इसके क्षेत्र का अध्ययन करेंगे। परिभाषा की तरह इसके क्षेत्र पर भी अर्थशास्त्री एकमत नहीं हैं। प्रो. जे. एम. कीन्स (J. M. Keynes) ने कहा है कि अर्थशास्त्र के क्षेत्र के विवेचन के लिए निम्नलिखित बातें आवश्यक हैं —

(1) अर्थशास्त्र की विषय - सामग्री (Subject - matter of Economics)

(2) अर्थशास्त्र की सीमाएँ (Limitations of Economics)

(3) अर्थशास्त्र विज्ञान है या कला अथवा दोनों (Economics is a Science or art of both)

(1) अर्थशास्त्र की विषय - सामग्री →

हम इसका उल्लेख परिभाषाओं में कर चुके हैं, परन्तु यहाँ पर पृथक रूप से इसका वर्णन करना उचित होगा। एडम ~~स्मिथ~~ स्मिथ तथा उसके समकालीन अर्थशास्त्रियों ने बताया कि अर्थशास्त्र में केवल धन का अध्ययन किया जाता है। परन्तु इसमें सुधार करके मार्शल तथा उसके अनुयायियों ने इसे भौतिक कल्याण का विज्ञान कहा। इनके अनुसार मानव की उन्हीं क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है

अर्थात जिन्हें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से धन के ~~मापदण्ड~~ मापदण्ड मे मापा जा सकता है। दूसरे शब्दों में, अर्थशास्त्र समाज से सम्बन्ध ~~रखने~~ रखने वाले सभी सामाजिक, वास्तविक और सामान्य मनुष्यों की धन-उपार्जित (Wealth-getting) और धन-व्यय (Wealth-Using) सम्बन्धी क्रियाओ का अध्ययन करता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

परन्तु प्रो. रॉबिन्स ने इन परिभाषाओं को दोषी ठहरा कर यह कहा कि अर्थशास्त्र सीमित साधनों का विज्ञान है। उसके अनुसार इसके द्वारा केवल उन्हीं आर्थिक पहलुओं का अध्ययन किया जाता है, जिनका सम्बन्ध ~~मूल्यांकन~~ मूल्यांकन से है। दूसरे शब्दों में, अर्थशास्त्र मे मानव की क्रियाओं के केवल चयन करने (Choice-making) से सम्बन्धित पहलू का ही अध्ययन किया जाता है।

परन्तु प्रश्न यह उठता है कि अर्थशास्त्र मानव के एकान्तवासी रूप का अध्ययन करता है या सामाजिक सदस्य के रूप मे? मार्शल के अनुसार अर्थशास्त्र सामाजिक व्यक्तियों की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करता है।

परन्तु प्रो. रॉबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्र के अन्तर्गत उन सब व्यक्तियों की क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है जो समाज के सदस्य है अथवा समाज में रहते है अर्थात अर्थशास्त्र तो सम्पूर्ण मानव व्यवहार का अध्ययन करता है जिसका सम्बन्ध सीमित आवश्यकताओं के सीमित साधनों से है चाहे यह व्यवहार समाज के सदस्यों के रूप में हो या

समाज से बाहर। इसलिए यह केवल सामाजिक विज्ञान नहीं, अपितु मानव विज्ञान भी है।

प्रो० चैपमैन के अनुसार, "अर्थशास्त्र धन का उत्पादन, विनिमय, वितरण एवं उपभोग करने की विद्या है।" धन का उत्पादन प्रमुख है क्योंकि इसके द्वारा मानव की असीमित आवश्यकताओं को संतुष्ट किया जाता है। उपभोग के अन्तर्गत आवश्यकता तथा उनके प्रति मानव व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। उत्पादन के अन्तर्गत उत्पादन के नियमों, साधनों तथा विधियों का अध्ययन किया जाता है। आधुनिक समय में उत्पादन के नियमों, साधनों तथा विधियों का अध्ययन किया जाता है। आधुनिक समय में उत्पादन की विशिष्ट तकनीकों — मशीनीकरण, विशिष्टीकरण एवं श्रम — विभाजन का प्रयोग किया जाता है। अतः अर्थशास्त्र में निम्नांकित प्रश्नों का अध्ययन किया जाता है —

(1) क्या उत्पादन किया जाये ?
(2) उत्पादन किस प्रकार किया जाये ?
(3) उत्पादन का वितरण किस प्रकार किया जाये ?
(4) किसको वितरण किया जाये ?

2⇒ अर्थशास्त्र की सीमाएँ →

इनसे यह पता चल जाता है कि अर्थशास्त्र में क्या-क्या सम्मिलित है और क्या-क्या नहीं है, जिसके कारण विषय

का अध्ययन क्षेत्र प्रकाश मे आ जाता है।

मार्शल के अनुसार, अर्थशास्त्र का अध्ययन निम्न सीमाओ के अन्तर्गत किया जाता है —

(1) अर्थशास्त्र मे केवल मनुष्यों की ही क्रियाओ का अध्ययन किया जाता है, अन्य पशु-पक्षियों की क्रियाएं इसके क्षेत्र से परे है।

(2) इसमें भी केवल उन्ही व्यक्तियों की क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है जो सामाजिक, वास्तविक और सामान्य है।

(3) केवल वास्तविक व्यक्तियों की क्रियाओ का अध्ययन किया जाता है, काल्पनिक इत्यादि का नही।

प्रो. रोबिन्स के मतानुसार,

(1) अर्थशास्त्र मे केवल मानवीय क्रियाओ का अध्ययन किया जाता है।

इसमें धन से मापी जाने वाली और धन से न मापी जाने वाली दोनो प्रकार की क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

जे. एम. कीन्स (J. M. Keymes) ने अर्थशास्त्र के क्षेत्र में निम्न तत्वों को रखा है —

1- अर्थशास्त्र की विषय - वस्तु
2- अर्थशास्त्र की प्रकृति (स्वरूप)
3- अर्थशास्त्र का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध

सामान्यत: अर्थशास्त्र के क्षेत्र मे निम्न को स्थान दिया जाता है —

(क) अर्थशास्त्र की विषय - वस्तु
(ख) अर्थशास्त्र की प्रकृति

मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, [illegible], बलिया

(स) अर्थशास्त्र की सीमाएँ

अर्थशास्त्र की विषय - वस्तु को दो भागों में विभक्त किया जाता है— माइक्रो इकॉनॉमिक्स (Micro Economics) तथा मैक्रो अर्थशास्त्र (Macro Economics)। ओस्लो विश्वविद्यालय (नार्वे) के प्रो. रेगनर फ्रिश (Ranger Frisch) ने इन शब्दों का प्रयोग 1933 में किया था। Micro शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'Mikros' से मानी जाती है जिसका अर्थ है सूक्ष्म। 'Macro' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'Makros' से मानी जाती है जिसका अर्थ है व्यापक। माइक्रो अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की छोटी वैयक्तिक इकाइयों के विश्लेषण से सम्बन्धित है। इसके क्षेत्र में उपभोक्ता, वैयक्तिक फर्म तथा छोटे समूह या वैयक्तिक इकाइयाँ अर्थात् विभिन्न उद्योग तथा बाजार आते हैं। मैक्रो अर्थशास्त्र सम्पूर्ण रूप में अर्थव्यवस्था (Economy) के क्रिया-कलाप से सम्बन्धित है। इसके क्षेत्र में सम्पूर्ण देश आय, रोजगार, उपभोग तथा निवेश आता है। इसके प्रमुख प्रकार हैं— राष्ट्रों की आय का निर्धारण, मूल्य, रोजगार, उपभोग तथा निवेश का निर्धारण, आर्थिक विकास आदि।

अर्थशास्त्र शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य →

अर्थशास्त्र शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य निम्नांकित रूप से दिये गये हैं।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय

अर्थशास्त्र - शिक्षण के लक्ष्य →

शिक्षा के लक्ष्यों के लिए हमें समाज की ओर ध्यान देना पड़ता है, अर्थात, शिक्षा के उद्देश्य समाज की व्यवस्था के अनुसार, निर्धारित किये जाते है। जैसा समाज होगा, उसके शैक्षालयों के वैसे ही लक्ष्य होंगे। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रत्येक विषय के लक्ष्य सामान्य शिक्षा के उद्देश्यों के आधार पर निर्धारित किये जाते है। प्रो. सी. ई. एम. जोड ने अपनी पुस्तक 'About Education' में शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य बताये है —

(1) प्रत्येक लड़के या लड़की को अपनी जीविका कमाने के लिए योग्य बनाना।
(To equip a boy or girl to earn his or her living)

(2) उसको लोकतन्त्र में एक सफल नागरिक का कार्य करने योग्य बनाना।
(To equip him to play his part as the citizen of a democracy.)

यदि शिक्षा के उपर्युक्त लक्ष्यों को ध्यान-पूर्वक देखा जाये तो प्रतीत होगा कि ये लक्ष्य किसी एक विशिष्ट विषय के अध्ययन से प्राप्त नहीं किये जा सकते, फिर भी इनकी प्राप्ति में अर्थशास्त्र बहुत ही सहायक है। इस प्रकार के विवेचन के आधार पर हम कह सकते है कि प्रत्येक विषय के लक्ष्य शिक्षा के लक्ष्यों के आधार पर निर्धारित होते है।

प्रो. पीगू के अनुसार अर्थशास्त्र – शिक्षण उद्देश्य –

पीगू ने अपनी पुस्तक 'The Economics of Welfare' में बताया है कि किसी विषय के अध्ययन के दो प्रमुख ध्येय हुआ करते हैं जो इस प्रकार है –

① ज्ञान प्राप्त करना तथा
② व्यावहारिक जीवन की समस्याओं को सुलझाना।

उन्होंने बताया कि यदि किसी विषय में एक ध्येय का महत्व अधिक तो दूसरे विषय में दूसरे ध्येय का महत्व अधिक होता है। परन्तु अर्थशास्त्र में इन दोनों उद्देश्यों का समन्वय है, अर्थात दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि यह शास्त्र हमें प्रकाश भी देता है तथा फल भी।

प्रो. मार्शल के मतानुसार अर्थशास्त्र – शिक्षण के उद्देश्य →

प्रो. मार्शल का कथन है, "अर्थशास्त्र के अध्ययन का ध्येय प्रथमतः ज्ञान के लिए ज्ञान प्राप्त करना है और दूसरे, व्यावहारिक जीवन, विशेषतः मानसिक जीवन में मनुष्य के पथ को प्रशस्त करना है।"

एम. पी मुफात (M. P. Moffat) ने अपनी पुस्तक 'Social Studies Instruction' में अर्थशास्त्र – शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य बताये हैं –

① छात्रों को उन आर्थिक स्थितियों तथा लाभों के सम्भाव्य साधनों से परिचित कराना, जिससे वे अपने व्यवसाय का चयन कर सकें।
② छात्रों में कुशल उपभोक्ता की भावना का विकास करना।
③ राष्ट्रीय आय में वृद्धि करने की क्षमता प्रदान करना।

अर्थशास्त्र - शिक्षण के उद्देश्य →

अर्थशास्त्र - शिक्षण के उद्देश्यों को जानने से पूर्व लक्ष्य (Aim) तथा उद्देश्यों का अर्थ एवं अन्तर देखना अनिवार्य है। प्रायः लक्ष्य तथा उद्देश्य दोनों का एक ही अर्थ लगाया जाता है, परन्तु ऐसा नहीं है इनके वास्तविक अर्थ को स्पष्ट करने के लिए इनकी पृथक - पृथक परिभाषाएँ तथा इनके अर्थ को नीचे दिया जा रहा है -

लक्ष्य का अर्थ (Meaning of Aim) -

इसके अर्थ को स्पष्ट करते हुए ~~कार्टर~~ कार्टर वी० गुड ने लिखा है, "लक्ष्य पूर्व - निर्धारित साध्य होता है जो किसी कार्य या क्रिया का मार्गदर्शन करता है।"
(Aim is a foreseen end that gives direction to an activity - Carter, V. Good)
लक्ष्य में दूरदर्शिता होती है। साथ ही इसमें आदर्शवादिता होती है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

उद्देश्य का अर्थ (Meaning of objective)

[illegible]

के लिए कार्य करते है तो उसके लिए हमें जिन छोटी - छोटी बातों को ध्यान में रखना पड़ता है उन्हे उस लक्ष्य के उद्देश्य कहते है उद्देश्य के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कार्टर वी. गुड ने आगे लिखा है "उद्देश्य छात्र के व्यवहार में वह वांछित परिवर्तन है जो विद्यालय द्वारा प्रदर्शित का परिणाम होता है।" इस प्रकार उद्देश्य में व्यावहारिकता अधिक होती है। दूसरे, इसको प्राप्त कराने का दायित्व शिक्षण के कन्धो पर होता है।

05/09/2020
प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पण्डेयपुर, ताखा, बलिया